RNI No. 38072/81 पोस्टल रजिस्ट्रेशन : आई.आर./जयपुर सिटी/219/2024-26

समन्वय वाणी

सच लिखने का साहस व सलीका

पाक्षिक

129, जादोन नगर 'बी' स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-302018

सेवा में,

ISSN 2456-7086

वर्ष : 46, अंक : 5 जयपुर-1 से 25 मार्च 2026 (वीर सं. 2552) स्थायी : 1101/- वार्षिक :100/- मूल्य 2/- पृष्ठ : 8

इजराइल का सर्वोच्च संसदीय सम्मान मिला मोदी को

पीएम मोदी को इजराइल की संसद केनेसट का सर्वोच्च संसदीय सम्मान स्पीकर ऑफ द केनेसट मेडल दिया गया। वे यह पाने वाले पहले भारतीय और पहले वैश्विक नेता हैं। 2018 में उन्हें फिलिस्तीन का सर्वोच्च सम्मान ग्रैंड कॉलर ऑफ द स्टेट ऑफ फिलिस्तीन मिला। पीएम मोदी पहले ऐसे नेता बने जिन्हें फिलिस्तीन और इजराइल दोनों से सम्मान मिला है।

मोदी इंस्टाग्राम पर 10 करोड़ फॉलोअर्स वाले पहले नेता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंस्टाग्राम पर 10 करोड़ फॉलोअर्स का आंकड़ा पार कर इतिहास रच दिया है। वे इस उपलब्धि तक पहुँचने वाले पहले विश्व नेता बन गए हैं। मोदी 2014 में इंस्टाग्राम से जुड़े थे। फॉलोअर्स के मामले में मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प (4.32 करोड़) से दोगुने से अधिक आगे हैं। भारत में सीएम योगी आदित्यनाथ (1.61 करोड़) और राहुल गांधी (1.26 करोड़) दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।

माओवादी सरेंडर कराने में बी. सुमति की अहं भूमिका

हैदराबाद : तेलंगाना में हाल ही में शीर्ष माओवादी देवजी ने समर्पण किया। इसमें स्पेशल इंटेलिजेंस ब्रांच (एसआईबी) की प्रमुख बी. सुमति की अहम भूमिका मानी जा रही है। उनकी निगरानी में राज्य में 591 माओवादी समर्पण कर चुके हैं। सुमति ने सुनिश्चित किया कि समर्पण राज्य की शर्तों पर हो, न कि माओवादियों की शर्तों पर। दो दशक पहले जब एकीकृत आंध्रप्रदेश सरकार के साथ शांति वार्ता शुरू हुई तब सुमति डीएसपी थीं। इस अभियान से उन्होंने अलग पहचान बनाई। 2024 में जब उन्हें एसआईबी आईजी नियुक्त किया गया तो वे माओवादी विद्रोह से निपटने के विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित बल में इस पद को संभालने वाली पहली महिला थीं।

बिना सिम के नहीं चलेंगे वॉट्सएप व टेलीग्राम

नई दिल्ली : केंद्र सरकार ने स्पष्ट कर दिया कि 'सिम बाइंडिंग' नियमों को लागू करने की 28 फरवरी की समय सीमा को आगे नहीं बढ़ाया जाएगा। नए नियमों के तहत, मोबाइल में सिम नहीं है, तो वॉट्सएप, टेलीग्राम, सिग्नल, स्नेपचैट जैसे मैसेजिंग एप काम नहीं करेंगे। कंप्यूटर पर लॉगइन किया हुआ वॉट्सएप भी हर 6 घंटे में लॉगआउट हो जाएगा। सरकार का दावा है कि इससे साइबर जालसाजों का पता लगाने में मदद मिलेगी।

ओम बिरला की उपस्थिति में सिद्धचक्र विधान

कोटा : यहाँ के आरके पुरम में अष्टान्हिका महापर्व पर परम पूज्य गणिनी श्रमणी आर्यिका रत्न श्री 105 विभाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में आयोजित श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर बिरला ने कहा माताजी ने पिछले कई वर्षों से भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलते हुए संयम, सेवा और आध्यात्मिक जागरण का संदेश दिया है। उनका जीवन त्याग और लोककल्याण के प्रति समर्पण का उदाहरण है। मैं माताजी के चरणों में नमन करता हूँ और उनके आशीर्वाद के लिए कृतज्ञ हूँ। भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य और करुणा के सिद्धांत हमें सही मार्ग दिखाते हैं। माताजी का सान्निध्य समाज में शांति, सद्भाव और संस्कारों को सुदृढ़ करने की प्रेरणा देता है।

जैन मानस्तंभ का लोकार्पण किया ममता ने

कोलकाता : भवानीपुर क्षेत्र में जैन समाज के लिए एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक अवसर देखने को मिला जब पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जैन मानस्तंभ का विधिवत् लोकार्पण किया। इस अवसर पर राज्य की अन्य विकास परि-योजनाओं का भी शुभारंभ किया गया। मुख्यमंत्री ने राज्य और जैन धर्म के ऐतिहासिक संबंधों का उल्लेख करते हुए विशेष रूप से वर्धमान और पुरुलिया जिलों का जिक्र किया, जहाँ जैन विरासत के प्राचीन प्रमाण पाए जाते हैं। उन्होंने कहा कि जैन समुदाय की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उपस्थिति राज्य की समृद्ध परंपरा का हिस्सा रही है। जैन मानस्तंभ को अहिंसा, संयम और सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का प्रतीक माना जाता है। सामाजिक दृष्टि से यह आयोजन जैन विरासत को सार्वजनिक सम्मान मिलने के साथ-साथ पूर्वी भारत में उसकी ऐतिहासिक उपस्थिति को पुन: रेखांकित करने वाला महत्त्वपूर्ण क्षण माना जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान साल्ट लेक में एक बहुधार्मिक सांस्कृतिक केंद्र के निर्माण की योजना की भी घोषणा की गई, जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपने कार्यक्रम आयोजित कर सकेंगे।

Created by Universal Document Converter

सम्पादकीय

समन्वय वाणी में प्रकाशित लेखों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं।

ऋषभदेव : भरत के रूप में 'भारत' की प्रामाणिक परंपरा

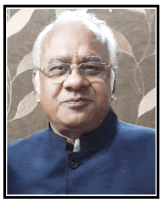

भारतीय आध्यात्मिक चेतना में भगवान ऋषभदेव का स्थान आद्य प्रवर्तक के रूप में है। उन्होंने केवल मोक्षमार्ग का ही उपदेश नहीं दिया, बल्कि सामाजिक संगठन, श्रम-विभाजन और सांस्कृतिक जीवन की आधारशिला रखी। उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती सम्राट बने और जैन परंपरा के अनुसार उनके ही नाम पर यह भूभाग भारतवर्ष कहलाया।

इतिहास और परंपरा के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 'भरत' नाम की प्राचीनता निर्विवाद है, परंतु उसे विशेष रूप से ऋषभदेव-पुत्र भरत से जोड़ने के प्रमाण जैन साहित्य में अधिक सुस्पष्ट और निरंतर मिलते हैं। जैन आगम, पुराण और चरित्रग्रंथों में भरत चक्रवर्ती का विस्तार से वर्णन है - उनकी दिग्विजय, चक्ररत्न की प्राप्ति और अंततः वैराग्य का प्रसंग।

ओडिशा के हाथीगुम्फा शिलालेख, जिसे कलिंग के राजा खारवेल ने उत्कीर्ण कराया, जैन परंपरा की प्रतिष्ठा का ऐतिहासिक साक्ष्य है। इससे यह सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व पहली शताब्दी तक आदि-नाथ और उनकी परंपरा की स्मृति राजनीतिक-सांस्कृतिक जीवन में विद्यमान थी।

वैदिक साहित्य - विशेषतः ऋग्वेद में 'भरत' जन का उल्लेख अवश्य मिलता है, परंतु वहाँ 'भारत' नाम का प्रत्यक्ष और स्पष्ट भौगोलिक प्रयोग उतनी स्पष्टता से नहीं मिलता जितना जैन परंपरा में 'भरत चक्रवर्ती' के माध्यम से मिलता है। अतः यदि प्रत्यक्ष नामकरण-परंपरा की दृष्टि से देखा जाए, तो ऋषभदेव-पुत्र भरत के साथ 'भारतवर्ष' की संगति अधिक सुसंगत और परंपरागत रूप से प्रमाणित प्रतीत होती है।

जैन ग्रंथों में भरत को चक्रवर्ती सम्राट के रूप में वर्णित किया गया है, जिनके शासन में संपूर्ण आर्यावर्त एकीकृत हुआ। 'भारतवर्ष' शब्द उसी सार्वभौम सत्ता और धर्माधारित शासन की स्मृति का द्योतक है। यह केवल भौगोलिक पहचान नहीं, बल्कि धर्म, संयम और न्याय पर आधारित राज्य-व्यवस्था का प्रतीक है।

ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांत आज भी भारत की आत्मा का आधार हैं। यदि 'भारत' नाम भरत चक्रवर्ती से जुड़ा है, तो उसका आध्यात्मिक मूल भी ऋषभदेव के संयम और धर्म में निहित है। इस दृष्टि से राष्ट्र की पहचान केवल ऐतिहासिक विमर्श नहीं, बल्कि नैतिक दायित्व भी है।

'भारतवर्ष' नाम की व्याख्या विविध परंपराओं में भिन्न-भिन्न रूप से की गई है, किंतु ऋषभदेव-पुत्र भरत के रूप में इसके साक्ष्य जैन साहित्य और ऐतिहासिक संकेतों में अधिक सुस्पष्ट, निरंतर और संगत मिलते हैं। आज आवश्यकता है कि हम इस नाम के आध्यात्मिक आशय को समझें - अहिंसा, संयम और धर्माधारित जीवन और उसे राष्ट्रीय चरित्र का आधार बनाएं। तभी 'भारत' अपने नाम के अनुरूप विश्व में नैतिक आदर्श स्थापित कर सकेगा। - **डॉ. अखिल बंसल**

चर्चित व्यक्तित्व : डॉ. अनिल जैन

राजनीति में आने से पहले डॉ. अनिल जैन एक प्रतिष्ठित सर्जन रहे हैं। उन्होंने अपनी एम.बी.बी.एस. और एम.एस. (सर्जरी) की डिग्री प्राप्त की और दिल्ली के प्रसिद्ध मूलचंद अस्पताल में वरिष्ठ सर्जन के रूप में सेवाएँ दीं। आज भी वे अपनी चिकित्सा पृष्ठभूमि के कारण भाजपा के 'चिकित्सा प्रकोष्ठ' (Medical Cell) में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राजनीतिक सफर और प्रमुख पद - डॉ. जैन को भाजपा संगठन में 'हाई-इफेक्ट' नेता माना जाता है। उनके राजनीतिक करियर के मुख्य पड़ाव -

राष्ट्रीय महासचिव : वे भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव रह चुके हैं। इस दौरान उन्होंने हरियाणा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों के प्रभारी के रूप में काम किया। 2014 में हरियाणा में भाजपा की पहली बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने में उनकी चुनावी रणनीति की बड़ी भूमिका मानी जाती है।

राज्यसभा सांसद : वे उत्तर प्रदेश से राज्यसभा के सदस्य रहे हैं। संसद में वे अक्सर स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ी समितियों में सक्रिय रहते हैं।

संगठनात्मक कौशल : उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह के भरोसेमंद रणनीतिकारों में गिना जाता है, विशेषकर संगठनात्मक चुनावों और राज्य स्तरीय राजनीति के प्रबंधन में।

फिरोजाबाद के लिए योगदान और सक्रियता : हालांकि वे राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय रहते हैं, लेकिन फिरोजाबाद से उनका जुड़ाव हमेशा बना रहता है।

कांच उद्योग का मुद्दा : उन्होंने संसद और सरकार के स्तर पर फिरोजाबाद के कांच और चूड़ी उद्योग को 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' (ODOP) योजना के तहत बढ़ावा देने और प्राकृतिक गैस (GAIL) की आपूर्ति से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने के लिए कई बार पैरवी की है।

सामाजिक जुड़ाव : वे फिरोजाबाद में होने वाले स्थानीय आयोजनों, विशेषकर जैन समाज के धार्मिक कार्यक्रमों और चिकित्सा शिविरों में अक्सर हिस्सा लेते हैं।

रेलवे और बुनियादी ढांचा : फिरोजाबाद और टूंडला स्टेशनों पर प्रमुख ट्रेनों के ठहराव और जिले की सड़कों के चौड़ीकरण के लिए भी वे निरंतर प्रयास करते रहे हैं।

एक रोचक तथ्य : डॉ. अनिल जैन को टेनिस का बहुत शौक है और वे 'अखिल भारतीय टेनिस संघ' (AITA) के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

अश्लील कंटेंट दिखाने पर 5 ओटीटी प्लेटफॉर्म ब्लॉक

नई दिल्ली : केंद्र सरकार ने अश्लील और आपत्तिजनक सामग्री दिखाने वाले पांच ओटीटी प्लेटफॉर्म ब्लॉक करने के आदेश जारी किए हैं। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने मूडएक्सवीआईपी, कोयल प्लेप्रो, डिजी मूवीप्लेक्स, फील और जुगनू नाम के पाँच ओटीटी प्लेटफॉर्म ब्लॉक किए हैं। यह कार्रवाई सभी कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करते हुए की गई है। मंत्रालय ने कहा कि इन प्लेटफॉर्म पर ऐसी सामग्री उपलब्ध थी, जो अश्लील और आपत्तिजनक मानी गई। डिजिटल प्लेटफॉर्म को स्वतंत्रता है, लेकिन साथ ही नियमों और सामाजिक मर्यादाओं का पालन करना जरूरी है। सरकार आगे भी ऑनलाइन सामग्री पर नजर रखेगी और नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाएगी।

Created by Universal Document Converter

पैक्स सिलिका में भारत का होना एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

▣ ललित गर्ग, दिल्ली

इक्कीसवीं सदी का यह दौर कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर और तकनीकी आपूर्ति श्रृंखलाओं की वैश्विक प्रतिस्पर्धा का दौर बन चुका है। ऐसे समय में भारत द्वारा एआई शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन और उसके तुरंत बाद अमेरिका के नेतृत्व वाले समूह पैक्स सिलिका से औपचारिक रूप से जुड़ना केवल एक कूटनीतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी और रणनीतिक कदम है। यह उस नए भारत की घोषणा है जो तकनीकी शक्ति, नैतिक दृष्टि और वैश्विक संतुलन - तीनों को साथ लेकर चलने का सामर्थ्य अर्जित कर रहा है। एआई समिट के माध्यम से भारत ने स्पष्ट संकेत दिया है कि वह अब केवल तकनीक का उपभोक्ता राष्ट्र नहीं, बल्कि निर्माता और मार्गदर्शक की भूमिका निभाने के लिए तैयार है। दुनिया की तीसरी बड़ी एआई शक्ति बनने की दिशा में यह एक ठोस चरणन्यास है।

दुर्लभ खनिजों और सेमी-कंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला पर चीन का लगभग 90 प्रतिशत वर्चस्व पिछले कुछ वर्षों से वैश्विक चिंता का विषय बना हुआ है। कंप्यूटर चिप से लेकर रक्षा प्रणालियों और अंतरिक्ष तकनीक तक, हर क्षेत्र इन संसाधनों पर निर्भर है। इस पृष्ठभूमि में पैक्स सिलिका जैसे मंच की परिकल्पना एक संतुलित, विश्वसनीय और बहु-ध्रुवीय तकनीकी ढांचे के रूप में की गई है। भारत का इस समूह में शामिल होना केवल प्रतीकात्मक कदम नहीं, बल्कि रणनीतिक और अनिवार्य निर्णय है। भारत की इंजीनियरिंग क्षमता, विशाल युवा प्रतिभा और उभरता हुआ सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम इस गठबंधन को नई मजबूती प्रदान करेगा। यह पहल किसी के विरुद्ध आक्रामकता नहीं, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में संतुलन और विविधता स्थापित करने का प्रयास है। जब शक्ति का केंद्रीकरण टूटता है और साझेदारी का विस्तार होता है, तभी विश्व व्यवस्था स्थिर और संतुलित बनती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक में भारत ने तकनीक को शासन और विकास के केंद्र में स्थापित किया है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया और सेमीकंडक्टर मिशन जैसी पहलों ने एक मजबूत आधार तैयार किया है। भारत का डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर आज दुनिया के लिए एक मॉडल बन चुका है। आधार, यूपीआई और डिजिटल सेवाओं ने करोड़ों लोगों को आर्थिक मुख्यधारा से जोड़ा है। इसी आधार पर एआई और चिप निर्माण के क्षेत्र में महत्त्वाकांक्षी कदम उठाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री की सक्रियता और वैश्विक मंचों पर भारत की प्रभावी उपस्थिति ने देश को एक विश्वसनीय तकनीकी साझेदार के रूप में स्थापित किया है। उनका दृष्टिकोण केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है, बल्कि तकनीकी आत्म-निर्भरता को वैश्विक सहयोग के साथ जोड़ने का है।

भारत में चिप डिजाइन, निर्माण और एआई अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए बड़े निवेश आकर्षित किए जा रहे हैं। वैश्विक कंपनियाँ भारत को स्थिर लोकतंत्र, कुशल मानव संसाधन और दीर्घकालिक नीति स्थिरता वाले देश के रूप में देख रही हैं। पैक्स सिलिका जैसे अंतरराष्ट्रीय ढांचे का हिस्सा बनने से भारत को तकनीकी सहयोग, संयुक्त अनुसंधान, पूंजी निवेश और आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण में व्यापक लाभ मिलेगा। इससे न केवल चीन पर निर्भरता कम होगी, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता भी सुदृढ़ होगी। यह भागीदारी भारत को अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया और यूरोपीय देशों जैसी प्रमुख तकनीकी शक्तियों के साथ और अधिक निकटता से जोड़ेगी, जिससे वैश्विक तकनीकी परिदृश्य में भारत की प्रतिष्ठा निरंतर बढ़ेगी। भारत की विशेषता केवल तकनीकी क्षमता नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि भी है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित भारत एआई को मानव-केंद्रित विकास का माध्यम बनाना चाहता है। स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में एआई के उपयोग से व्यापक जन-कल्याण सुनिश्चित किया जा सकता है। यदि तकनीक कुछ शक्तियों के हाथों में सिमट जाए तो असंतुलन बढ़ता है, किंतु जब लोकतांत्रिक और समावेशी राष्ट्र इसका नेतृत्व करते हैं तो यह वैश्विक कल्याण का साधन बन सकती है। भारत का प्रयास है कि एआई के नैतिक मानदंड सार्वभौमिक हों और तकनीक का उपयोग हथियार के रूप में नहीं, बल्कि मानव प्रगति के साधन के रूप में हो।

भारत की दृष्टि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी प्रगति का उपकरण नहीं, बल्कि मानवीय चेतना के विस्तार का माध्यम है। जिस देश ने विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मंत्र दिया, जिसने करुणा, अहिंसा और सह-अस्तित्व की परंपरा को जीवन-मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित किया, वह एआई को भी केवल बाजार और प्रभुत्व की प्रतिस्पर्धा में नहीं, बल्कि मानव कल्याण और वैश्विक संतुलन के संदर्भ में देखता है। भारत की सभ्यता-चेतना, जो महात्मा गांधी की अहिंसा और गौतम बुद्ध की करुणा से अनुप्राणित है, तकनीकी विकास को नैतिक अनुशासन से जोड़ने की प्रेरणा देती है। यहाँ विकास का अर्थ केवल गति नहीं, बल्कि दिशा भी है; केवल क्षमता नहीं, बल्कि संवेदना भी है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को जीवन की समग्रता-प्रकृति, समाज और मानव गरिमा के साथ जोड़ा जाए, तो भारत विश्व संरचना में ऐसा संतुलित मॉडल प्रस्तुत कर सकता है जो तकनीक को विनाश का कारण बनने से रोककर उसे सृजन, समावेशन और मानव उत्कर्ष का सशक्त साधन बना दे।

आज दुनिया दो ध्रुवों के बीच खड़ी दिखाई देती है - एक ओर केंद्रीकृत तकनीकी वर्चस्व, दूसरी ओर साझेदारी और संतुलन का मॉडल। भारत का उभार इस द्वंद्व को संतुलन में बदलने की क्षमता रखता है। भारत न टकराव की राह पर है, न निष्क्रियता की, वह सक्रिय संतुलन की नीति अपना रहा है। यह संतुलन ही भविष्य की शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था का आधार बन सकता है। पैक्स सिलिका के माध्यम से भारत और उसके सहयोगी एक ऐसी नई दिशा दे सकते हैं जहाँ तकनीकी नवाचार का लाभ वैश्विक दक्षिण तक पहुँचे, आपूर्ति श्रृंखला पारदर्शी हो और वैश्विक शक्ति-संतुलन स्थिर रहे। निस्संदेह, यह समय भारत के लिए ऐतिहासिक है। एआई और सेमीकंडक्टर के इस युग में भारत का यह कदम उसकी आर्थिक और तकनीकी शक्ति को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उभरती यह तकनीकी और एआई क्रांति न केवल भारत को सशक्त बना रही है, बल्कि विश्व को भी संतुलन और सहयोग की नई राह दिखा रही है। आने वाले वर्षों में यह साझेदारी नई सृष्टि का आधार बन सकती है - एक ऐसी सृष्टि जहाँ तकनीक प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि समन्वय और शांति का माध्यम बने। भारत इस दिशा में दृढ़ता से अग्रसर है और विश्व नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए स्वयं को सक्षम बना रहा है।

Created by Universal Document Converter

'विवाह खर्च : मध्यम वर्ग की चुपचाप होती बर्बादी'

▣ अरविंद जैन 'बीमा', उज्जैन

कभी विवाह दो परिवारों का पवित्र मिलन होता था। संस्कार, सादगी और आत्मीयता उसकी पहचान थे। घर की चौखट पर हल्दी की महक, आँगन में गूंजती शहनाई, मंदिर में मंत्रोच्चार और सीमित लोगों की उपस्थिति—इतना ही पर्याप्त था। विवाह का अर्थ था संबंधों का विस्तार, न कि खर्चों का प्रदर्शन।

परंतु आज विवाह एक संस्कार से अधिक 'प्रोजेक्ट' बन गया है। इवेंट मैनेजमेंट कंपनियाँ, थीम डेकोरेशन, डेस्टिनेशन वेडिंग, ड्रोन शूट, कोरियोग्राफर, पाँच-पाँच फंक्शन—सब मिलकर विवाह को एक ऐसे आयोजन में बदल देते हैं जहाँ भावनाएँ पीछे छूट जाती हैं और दिखावा आगे आ जाता है।

मध्यम वर्ग के लिए यह दिखावा धीरे-धीरे एक सामाजिक दबाव बन चुका है। 'लोग क्या कहेंगे?' – यह वाक्य आज लाखों परिवारों को कर्ज़ में धकेल रहा है।

सादगी से आडंबर तक का सफर

पहले गाँव में एक सार्वजनिक विवाह होता था। बाकी रस्में घर की चारदीवारी में 10-15 अपनों के बीच सम्पन्न होती थीं। मंदिर में फेरे, घर पर सादा भोजन और खर्च 50-70 हज़ार में सीमित। सम्मान भी बना रहता था और भविष्य भी सुरक्षित।

आज एक सामान्य मध्यम-वर्गीय विवाह का अनुमानित खर्च 30-45 लाख तक पहुँच चुका है। दोनों पक्ष मिलाकर यह राशि 60-90 लाख तक हो जाती है। सगाई से लेकर रिसेप्शन तक हर कार्यक्रम अलग, हर समारोह में अलग सजावट, अलग कैटरिंग, अलग कपड़े। यदि किसी परिवार की मासिक आय 50-70 हज़ार है, तो 60-90 लाख का खर्च उनकी 10-12 वर्षों की पूरी कमाई के बराबर है। क्या एक रात की चमक के लिए 10 वर्षों का परिश्रम दांव पर लगाना उचित है?

दिखावे की कीमत

मैंने पिछले कुछ वर्षों में अनेक परिवारों को देखा है—शादी के बाद घर तो वही रहा, पर घरवाले टूट गए। ज़मीन बिक गई, माँ के गहने गिरवी पड़ गए, पिता कर्ज़ के बोझ तले दब गए, EMI ने चैन की नींद छीन ली, शादी की विदाई के बाद माँ की आँखों में आँसू होते हैं, पर वह खुशी के नहीं, भविष्य की चिंता के होते हैं। पिता रात को छत निहारते हुए सोचते हैं, अब कर्ज़ कैसे चुकाऊँगा?

विवाह के मंच पर हजारों लोगों की भीड़ होती है, पर मुसीबत के समय वही लोग कहीं दिखाई नहीं देते। न रिश्तेदार आते हैं, न डीजे वाला। तब काम आता है केवल बैंक बैलेंस और आर्थिक सुरक्षा।

सोशल मीडिया का भ्रम

टीवी सीरियल और इंस्ट्राग्राम रील्स ने विवाह की परिभाषा बदल दी है। अब शादी बड़ी नहीं, 'इवेंट' बड़ा होना चाहिए। दूल्हा-दुल्हन की एंट्री फिल्मी हो, फोटोशूट विदेशी लोकेशन जैसा लगे और हर पल सोशल मीडिया पर वायरल हो—यह मानसिकता हमें अंदर से खोखला कर रही है। पर सच्चाई यह है कि विवाह का असली गवाह मंदिर होता है, कैमरा नहीं।

विवाह का असली आशीर्वाद माता-पिता का हाथ होता है, ड्रोन शॉट नहीं। विवाह के बाद का सुकून कर्ज़मुक्त नींद में मिलता है, पाँच सितारा रिसेप्शन में नहीं।

दहेज और सामाजिक दबाव

दहेज आज भी अनेक स्थानों पर एक कड़वी सच्चाई है। 10-20 लाख की अतिरिक्त मांग मध्यम-वर्गीय परिवार को और अधिक संकट में डाल देती है। बेटी की शादी माता-पिता के लिए सम्मान का विषय है, पर जब यह सम्मान 'कर्ज़' में बदल जाता है, तब समाज को आत्ममंथन करना चाहिए।

समाधान क्या है?

समस्या का समाधान समाज के सामूहिक संकल्प में है। सादगीपूर्ण विवाह को सम्मान दें। सामूहिक विवाह और सामूहिक भोज को बढ़ावा दें। अनावश्यक रस्मों और दिखावे को सीमित करें। वरिष्ठजन, संत-महात्मा और सामाजिक संस्थाएँ पहल करें। दहेज का खुलकर विरोध करें।

यदि विवाह केवल मंदिर में फेरे और घर पर 200-300 लोगों के स्नेहपूर्ण भोजन तक सीमित रहे, तो कुल खर्च 2-3 लाख में सम्पन्न हो सकता है। सम्मान भी बचेगा, जमीन भी बचेगी और सबसे बड़ी बात – परिवार का मानसिक संतुलन भी सुरक्षित रहेगा।

असली पुण्य क्या है?

आज का सबसे बड़ा पुण्य यह नहीं कि आपने विवाह में लाखों खर्च किए।

सबसे बड़ा पुण्य यह है कि आपने अपनी संतान को कर्ज़मुक्त भविष्य दिया।

समाज के वरिष्ठ जनों, महात्माओं और संतों को चाहिए कि वे विवाह में धन की बर्बादी और दिखावे पर रोक लगाने का अभियान चलाएँ। जैसे कभी समाज ने बाल विवाह और अन्य कुप्रथाओं के खिलाफ आवाज़ उठाई थी, वैसे ही अब अत्यधिक विवाह खर्च के विरुद्ध जनजागरण आवश्यक है।

हर उस पिता तक यह संदेश पहुँचना चाहिए जो आज रात छत की ओर देखकर सोच रहा है —

'बेटी या बेटे की शादी कैसे होगी?'

उसे यह भरोसा मिलना चाहिए कि समाज उसके साथ है। कि सादगी में भी सम्मान है। कि कम खर्च में भी विवाह उतना ही पवित्र और सफल हो सकता है।

निष्कर्ष

विवाह जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है, परंतु वह जीवन से बड़ा नहीं है।

एक रात की चकाचौंध के लिए वर्षों की कमाई और मानसिक शांति को दांव पर लगाना बुद्धिमानी नहीं।

आइए संकल्प लें—

विवाह को फिर से संस्कार बनाएँ, व्यापार नहीं।

सादगी को प्रतिष्ठा दें, दिखावे को नहीं।

और आने वाली पीढ़ी को ऐसा समाज दें जहाँ विवाह खुशी का कारण बने, बर्बादी का नहीं।

आज का सबसे बड़ा पुण्य – एक पिता की चिंता कम करना।

जस्टिस वर्मा पर जाँच कमेटी का पुनर्गठन

नई दिल्ली : लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने जस्टिस यशवंत वर्मा से जुड़े कथित 'बर्निंग कैश' मामले की जाँच कर रही तीन सदस्यीय समिति का पुनर्गठन किया है। मद्रास हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस मनिंदर मोहन श्रीवास्तव के रिटायर्ड होने के बाद अब बॉम्बे हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस श्री चंद्रशेखर को समिति में शामिल किया गया है।

Created by Universal Document Converter

अटल की शाइनिंग इंडिया की राह मोदी का इक्विटी बिल

▣ विद्यावाचस्पति उदयराज मिश्र

भारतीय लोकतंत्र की यात्रा में नीतियाँ कागज़ पर नहीं बल्कि जन-मानस में चलती हैं। जनमानस की आकांक्षा, प्रत्याशा और भावनाओं के अनुरूप ही लोकमंगल तथा जन-कल्याण के मसले संसद में गहन परिचर्चा के उपरांत संस्थागत नीतियों के अंग बनते हैं, किंतु जब सत्ताधारी दलों को केवल अपनी सत्ता की निरंतरता ही सर्वाधिक प्रिय लगे तो वह ऐसे फैसले लेने में गुरेज नहीं करती जो सामाजिक विद्वेष और जनभावनाओं के द्वंद के कारण बनते हैं तथा परिणाम अन्त में नकारात्मक ही होता है। कदाचित् 2004 के आम चुनाव में अटलजी के नेतृत्व में 'फील गुड' और 'इंडिया शाइनिंग' का अभियान विकास, अवसंरचना और वैश्विक प्रतिष्ठा की उपलब्धियों पर आधारित था। आर्थिक संकेतक सकारात्मक थे, परंतु परिणामों ने यह सिखाया कि विकास की अनुभूति यदि व्यापक सामाजिक वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँचती, तो राजनीतिक आत्मविश्वास भी पराजय में बदल सकता है। कुछ ऐसा ही परिदृश्य यूजीसी के इक्विटी बिल को लेकर भी इस दफा नरेंद्र मोदी सरकार के खिलाफ बनता जा रहा है। हालांकि अबकी बार यह नजरिया भाजपा के चिरस्थाई वोट बैंक की नाराजगी को लेकर है।

दिलचस्प बात है कि आज मोदी के नेतृत्व में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 'इक्विटी' आधारित सुधारों की चर्चा है। उद्देश्य सामाजिक संतुलन और ऐतिहासिक वंचनाओं की भरपाई बताया जाता है। किंतु प्रश्न यह है कि कहीं नीति की मंशा और जनता की धारणा के बीच वही अंतर तो नहीं बन रहा, जो कभी 'फील गुड' के समय दिखा था? कहीं शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान की पीठ पर बंदूक रखकर कोई और तो सवर्णों पर फायर नहीं कर रहा है या कि स्वयं भाजपा अब अपने परम्परा गत समर्थक सामान्य वर्ग से पिंड छुड़ाकर ओबीसी, दलितों और मुसलमानों की राजनीति करने की हमराह होना चाहती है? जो भी हो, भाजपा की स्थिति अब सांप और छँछूदर जैसी है।

इक्विटी बनाम मेरिट की बहस वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक तो है किंतु सामान्यवर्ग को अकारण अपराधी बनाकर ही यह किया जाय, ऐसा अनुचित निर्णय कभी स्वीकार नहीं हो सकता है। उच्च शिक्षा में अवसरों का न्यायपूर्ण वितरण लोकतांत्रिक आदर्श है। किंतु जब 'इक्विटी' की अवधारणा को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि सामान्य वर्ग के युवाओं को अवसर-संकुचन का भय होने लगे पढ़ाई आदि में पिछड़ने पर या द्वेषवश ओबीसी तथा दलित या मुस्लिम छात्रों द्वारा सामान्यवर्ग के विद्यार्थियों को आरोपित करने की गलत परम्परा ही शुरू हो तो सामाजिक तनाव जन्म ले सकता है। इस लिहाज से बिल को लेकर सामान्यवर्ग की नाराजगी वाजिब है। सामान्य वर्ग को प्राय: एक समृद्ध और सशक्त समूह के रूप में चित्रित किया जाता है, जबकि यथार्थ अधिक जटिल है। ग्रामीण भारत और छोटे नगरों में अनेक ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा अन्य सामान्य वर्गीय परिवार आर्थिक रूप से अत्यंत विपन्न हैं - भूमिहीन, सीमित आय वाले, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के संसाधनों से वंचित।

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की व्यवस्था एक सकारात्मक पहल है, परंतु उसका दायरा और प्रभाव अभी भी बहस का विषय है। यदि अति गरीब सामान्य वर्गीय युवाओं को यह लगे कि उनकी गरीबी केवल इसलिए कम महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वे 'सामान्य वर्ग' से हैं, तो यह अनुभूति राजनीतिक असंतोष में बदल सकती है।

उपेक्षा की भावना और संभावित चुनावी प्रभाव सदैव आकांक्षी राजनैतिक दलों पर भारी पड़े हैं। 2004 का अनुभव बताता है कि उपलब्धियों का आकलन जनता अपने अनुभवों के आधार पर करती है। यदि किसी वर्ग में यह धारणा बने कि उसकी आकांक्षाएँ गौण हो रही हैं, तो उसका असर चुनावों में दिख सकता है। भाजपा के लिए ऐसी स्थितियाँ कभी भी सुखप्रद नहीं रही हैं।

शिक्षित मध्यमवर्ग जो नीति और विमर्श को दिशा देता है—यदि स्वयं को उपेक्षित अनुभव करे, तो वह राजनीतिक विमर्श को प्रभावित करता है। सोशल मीडिया के युग में यह प्रभाव और तीव्र हो जाता है।

भाजपा सरकार मुफ्तखोरी की प्रवृत्ति को बढ़ाकर भले ही इसे कल्याण बनाम निर्भरता कहे किंतु सत्य तो यही है कि यह राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति का साधन है। पिछले वर्षों में केंद्र और राज्यों द्वारा मुफ्त राशन, बिजली, छात्रवृत्तियाँ, नकद हस्तांतरण जैसी योजनाओं का विस्तार हुआ है। कल्याणकारी राज्य की अवधारणा आवश्यक है, परंतु यदि राजनीति 'प्रतिस्पर्धी मुफ्तखोरी' का रूप ले ले, तो यह नागरिकों में निर्भरता की मानसिकता को जन्म दे सकती है। यदि अधिकार का बोध परिश्रम और योग्यता से हटकर केवल राजनीतिक समीकरण से जुड़ जाए, तो उत्पादकता और आत्मनिर्भरता दोनों प्रभावित होते हैं। शिक्षा क्षेत्र में भी यदि इक्विटी की बहस को मेरिट के प्रतिपक्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया, तो यह विभाजन को गहरा कर सकता है।

विचारणीय तथ्य तो यह भी है कि हाल के वर्षों में कुछ राजनीतिक वक्तव्यों और वैचारिक मंचों पर ऐसी भाषा उभरी है जो ऐतिहासिक अन्याय के संदर्भ में वर्तमान पीढ़ियों को सामूहिक रूप से दोषी ठहराती है। चाहे वह कुछ ओबीसी नेताओं का आक्रामक वक्तव्य हो या कुछ दलित विचारकों की तीखी अभिव्यक्ति—यदि वह संपूर्ण किसी जाति-समूह के प्रति द्वेष का रूप ले ले, तो इसके दुष्परिणाम गंभीर हो सकते हैं। जिसके संभावित परिणामों में सामाजिक ध्रुवीकरण और पारस्परिक अविश्वास, प्रतिक्रिया-आधारित राजनीति का उभार, विश्वविद्यालयों और सार्व-जनिक विमर्श में कटुता, राष्ट्रीय एकता पर आघात आदि। यही इतिहास की पीड़ा वास्तविक है, परंतु उसका समाधान वर्तमान पीढ़ियों के बीच वैमनस्य बढ़ाकर नहीं किया जा सकता। संविधान का मार्ग—न्याय, समानता और बंधुता—प्रति-शोध नहीं, संतुलन की शिक्षा देता है।

अत: समस्या के समाधान जाति की जगह आर्थिक आधार को प्राथमिकता देते हुए प्रत्येक अति गरीब चाहे किसी भी जाति के हों, उन्हें लक्षित सहायता मिले।

अवसरों का विस्तार हो तथा उच्च शिक्षा संस्थानों और सीटों की संख्या बढ़ाकर प्रतिस्पर्धा का दायरा विस्तृत किया जाए। डेटा-आधारित पारदर्शिता करते हुए नीतियों के प्रभाव का स्पष्ट आकलन सार्व-जनिक किया जाए तथा नेताओं और विचारकों को ऐसी भाषा से बचना चाहिए जो विभाजन को बढ़ाए। इसके अलावा कल्याण से कौशल की ओर - मुफ्त योजनाओं के साथ कौशल-विकास और उद्यमिता को जोड़ा जाए।

अटल युग का 'फील गुड' यह सिखाता है कि विकास का दावा तभी टिकाऊ होता है जब उसकी अनुभूति व्यापक और संतुलित हो। आज 'इक्विटी' का विमर्श भी तभी सफल होगा जब वह किसी नए वर्ग में उपेक्षा और आक्रोश की भावना उत्पन्न न करे। लोकतंत्र में स्थायी सफलता वही पाता है, जो समाज के हर वर्ग—ऐतिहासिक रूप से वंचित और वर्तमान में वंचित—दोनों को सम्मान, अवसर और विश्वास प्रदान करे।

विकास और सामाजिक न्याय का समन्वय ही वह सेतु है, जो अतीत की भूलों और भविष्य की आशाओं के बीच संतुलन स्थापित कर सकता है।

Created by Universal Document Converter

प्री सेलिब्रेशन

▣ डॉ. ज्योति जैन, खतौली

अभी हाल ही में मेरे परिचित की बेटी प्री वेडिंग शूट करवा कर आयी। मध्यमवर्गीय परिवार में मानों खुशियों का खजाना मिल गया। यह खबर सुनाते हुए पूरे परिवार के चहरे पर जो खुशी की चमक थी वह देखने लायक थी। दूसरी घटना एक और परिवार की - उन्हें अपने बेटे की शादी करनी थी, मुझसे भी कोई लड़की बताने की कहा। बाद में निराशा भरे भाव से कहती है कि रिश्ता तो पक्का हो गया था पर प्री वेडिंग शूट से लौटने के बाद ना जाने क्या हुआ लड़की ने रिश्ता तोड़ दिया। परम्परागत और संस्कारयुक्त, धार्मिक परिवारों में प्री लैंडिग शूट जैसे इवेंट कैसे अपना लिए गये, मेरी तो समझ से परे है।

पहली मुलाकात हो या सगाई की रस्म, शादी हो या प्रेग्नेंसी की खबर, जन्मदिन हो या अन्य मेमोरी डे आज हर खुशी के अवसर को स्पेशल बनाने के लिए प्री-सेलिब्रेशन, फोटो शूट का चलन बढ़ गया है। सब कुछ खास अंदाज में दिखाने का आकर्षण अमीर परिवारों से निकल कर मध्यम वर्ग तक आ गया है। प्री सेलिब्रेशन जश्न मनाने की चाहत बढ़ती जा रही है। और इस चलन ने आयोजनों को महंगा बना दिया। अनेक लोग इस काम में आगे आ रहे हैं।

समाज के इस बदलते परिवेश में जीवन के खास पलों को जीवनभर याद रखने की भावना से अनेक लोग खूब पैसा खर्च कर रहे हैं। यादगार और एक नयापन देने के लिये आज की पीढ़ी तैयार है। अपना स्टेट्स, नेटवर्क बढ़ाना, एक विशिष्ट पहचान बनाना या अपनी खुशी आदि के लिये युवाओं के बीच में ये इवेंट लोकप्रिय हो रहे हैं। हम किसी से कम नहीं या उसने किया तो हम भी करेंगे की भावना भी काम करती है।

हमारे यहाँ के भव्य समारोह शादी पार्टी, वर्थ डे पार्टी, एनर्वसरी पार्टी आदि आयोजनो, उत्सवों के कारण एक अच्छा खासा उद्योग पनप गया है जो निरन्तर बढ़ रहा है। घर से लेकर बैंकटहाल, फार्म हाउस, भोजन से लेकर आयोजन के लास्ट तक सब कुछ कुशल वर्करों के हाथ में आ गया है। इवेंट प्लान इंडस्ट्री तेजी से विकसित हो रही है। इसके साथ ही ब्यूटी पार्लर बुटीक, गिफ्ट पैक। सेल, केटरिंग, साज सजना और अनेक तरह के दिखावटी स्टाल दिन-दूनी रात- चौगुनी तरक्की कर रहे हैं। एक तरह से देखे तो शिक्षा से ज्यादा खर्च विवाह आदि पर हो रहा है।

समय के बदलाव ने हमारे रीतिरिवाज हमारी परम्परायें रस्में मान्यतायें सभी पर प्रभाव डाला है। खुशियों पर इतना पैसा न्योछावर करने वालों के जीवन में कितनी खुशियां बरसेगी यह प्रश्न भी उपस्थित होने लगा है। खाओ पियो और मौज करो के साथ दिखावा संस्कृति ने व्यक्ति परिवार समाज को बहुत प्रभावित किया है। विडम्बना तो तब है जब हैसियत न होते हुए भी खर्च करना है। हमारे संस्कारों, रीतिरिवाजों की धज्जियाँ भी उड़ती नजर आती हैं। युवा लोगों के रोमाटिक फिल्मी अदांज तो प्री- शूट में पूरे हो जाते हैं पर हमारी संस्कृति/संस्कार। मर्यादायें, टूटते नजर आ रहे हैं सब कुछ बदल रहा है समय-समय पर हमारे गुरुवर आर्यिका मातायें, भैयाजी, दीदी इन सब विसंगतियों के प्रति सचेत करते हैं। पर असर कितना....

विभिन्न प्रकार के अनाज से की गई महामंडल की रचना

जयपुर : आचार्य वर्धमान सागर ससंघ के सान्निध्य में जैन-अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में आचार्य धर्मसागर का 58वाँ आचार्य पदारोहण महोत्सव मनाया गया। आचार्य वर्धमानसागर ने आचार्यश्री का गुणानुवाद कर बताया कि 58 में 5 और 8 का योग 13 होता है। आगम अनुसार दिगम्बर मुनियों का 13 प्रकार का चारित्र बताया है यह मोक्षमार्ग पर बढ़ने में सहायक है। गुणानुवाद करना शिष्य का कर्तव्य है। साथ ही आचार्यश्री की जीवनी से भी रूबरू करवाया। दोपहर में आचार्य धर्म सागर के महामंडल विधान का पूजन हुआ। इस मौके पर आर्यिका सरस्वतीमति व स्वस्तिभूषण भी मौजूद रहीं। महामंडल की रचना विभिन्न धान अनाज से की गई। अष्ट द्रव्यों में जल-चंदन के 58-58 कलश के साथ ही अक्षत थाल, फल-फूल व नैवेद्य भी 58 प्रकार के थे। 58 अर्घ्य चढ़ाने के बाद जयमाला हुई। विनयांजलि सभा में भरत जैन ने आचार्य वर्धमान सागर से वर्ष 2027 का वर्षायोग करने का निवेदन किया। राजेन्द्र कटारिया व सुरेश सबलावत सहित देशभर से समाजजनों ने कार्यक्रम में शिरकत की।

अष्टाह्निका पर्व : आठ दिवसीय विधान आयोजित

जयपुर : जैन धर्म के आठ दिवसीय शाश्वत अष्टाह्निका महापर्व पर शहर के दिगंबर जैन मंदिरों में सिद्धों की आराधना के लिए सिद्धचक्र महामंडल विधान तथा नन्दीश्वर द्वीप विधान सहित पूजा अर्चना के विशेष आयोजन हुए। मुनियों तथा संतों ने प्रवचन दिए। महामंडल विधान के तहत सुबह घटयात्रा के बाद ध्वजारोहण भी हुआ। मीरा मार्ग, बनीपार्क स्थित मंदिर में आचार्य सुंदर सागर व शशांक सागर ससंघ के सान्निध्य में अर्घ्य चढ़ाए गए। आचार्य संघ की महाआरती की गई। महावीर नगर के महावीर साधना केन्द्र और दिगम्बर जैन मंदिर में मुनि विनम्र सागर ससंघ के सान्निध्य में कार्यक्रम हुआ। गोपालजी का रास्ता स्थित जैन मंदिर में पूजा हुई। मंत्री अशोक टकसाली ने बताया कि विधान कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्रों से भी श्रावकजन शामिल हुए। मानसरोवर एसएफएस स्थित मंदिर में भगवान संभवनाथ का गर्भकल्याणक महोत्सव मनाया गया। अष्टाह्निका महापर्व वर्ष में तीन बार आषाढ़, फागुन, कार्तिक मास में आता है। इसमें मुख्यत: सिद्धचक्र महामंडल विधान या नंदीश्वर विधान किया जाता है। शास्त्रों के अनुसार मैना सुंदरी ने श्रीपाल आदि 700 रोगियों के कुष्ठ रोग निवारण के लिए सिद्धचक्र महामंडल विधान किया था। इस अवसर पर जैन संतों के प्रवचन के साथ ही अन्य धार्मिक अनुष्ठान भी सम्पन्न हुए।

Created by Universal Document Converter

कलमवीर अलंकरण समारोह सम्पन्न, नागदा व खाचरोद के पत्रकार सम्मानित

नागदा : अधिमान्य पत्रकार एकता कल्याण संघ द्वारा मध्यप्रदेश के सुवासरा में राष्ट्र स्तरीय शक्ति रत्न महिला पत्रकार सम्मान एवं कलमवीर पत्रकार अलंकरण समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में पत्रकारों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित मातृशक्ति के करकमलों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। समारोह का संयोजन राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्रीमती जया बघेल एवं पंकज वैरागी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। संघ के मुख्य संयोजक एवं राष्ट्रीय संयोजक श्री विजय सिंह पंचोलिया की विशेष उपस्थिति रही, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में दाहोद से पधारे संतश्री उपस्थित रहे। मंच पर अंतरराष्ट्रीय कथावाचक सहित जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता एवं गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह के दौरान महिला इकाई राष्ट्रीय अध्यक्ष जया बघेल की अनुशंसा पर विजय सिंह एवं पंकज बैरागी द्वारा मंच से विभिन्न पदों की घोषणा की गई, जिसमें राजु गुप्ता को राष्ट्रीय सह सचिव, राहुल शर्मा को मध्यप्रदेश सह सचिव, दिलीप बुदीवाल (खाचरोद) को मध्यप्रदेश सचिव, केलाश चन्द्र को मध्यप्रदेश उपाध्यक्ष तथा संदीप धावरे (खाचरोद) को जिला अध्यक्ष मनोनीत किया गया। घोषणा के पश्चात् उपस्थित सदस्यों ने सभी मनोनीत पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। सभी पदाधिकारियों ने जया बघेल सहित संगठन के वरिष्ठ नेतृत्व का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर खाचरोद के गोपाल कपूर एवं नागदा के पत्रकार राजेश सकलेचा (संस्थापक, नागदा जर्नलिस्ट क्लब), अध्यक्ष मांगीलाल पोरवाल, सचिव दीपक जैन, डॉ. राहुल शर्मा, दिनेश सोलंकी, राजु गुप्ता, समाजसेवा एवं पत्रकारिता में अग्रणी भूमिका निभाने वाले निलेश मेहता तथा जीवनलाल जैन (चायवाले) सहित अनेक वरिष्ठ पत्रकारों को समाज सेवा एवं पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान हेतु कलमवीर सम्मान से अलंकृत किया गया।

एपल पे भारत में लॉन्च करने की तैयारी

मुंबई : डिजिटल पेमेंट सर्विस एपल पे को भारत में लॉन्च करने की तैयारी है। अमेरिकी कंपनी इसके लिए आईसीआईसीआई, एचडीएफसी, एक्सिस बैंक के साथ-साथ मास्टरकार्ड और वीसा जैसी ग्लोबल कार्ड नेटवर्क्स से भी चर्चा कर रही है। एपल पे यूपीआई और कार्ड-आधारित भुगतान, दोनों को सपोर्ट करेगी। एपल का जून तक भारत में पेमेंट सर्विस लॉन्च करने का लक्ष्य है।

सासद पूनम माडम को नई जिम्मेदारी

जामनगर : लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की ओर से गठित संसदीय मैत्री समूहों के तहत जामनगर की सांसद पूनम माडम को कज़ाकिस्तान के साथ संसदीय मैत्री समूह का ग्रुप लीडर नियुक्त किया गया है। इस नियुक्ति का उद्देश्य भारत और कज़ाकिस्तान के बीच संसदीय व राजनयिक संबंधों को और मजबूत करना है।

सीमांचल में घुसपैठ बर्दाश्त नहीं : अवैध ढांचे हटेंगे

अररिया : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि हमने चुनाव में बिहार की जनता से वादा किया था कि हम बिहार को घुसपैठियों से मुक्त करेंगे। इसका मतलब केवल मतदाता सूची से घुसपैठियों के नाम हटाना नहीं है। हम एक-एक घुसपैठिये को भारत की भूमि से चुन-चुनकर बाहर भेजने का काम करेंगे। सीमांचल क्षेत्र में इसकी शुरुआत कुछ ही समय में होने वाली है। अररिया में सुरक्षा एजेंसियों के साथ बैठक के बाद शाह ने निर्देश दिया है कि भारत-नेपाल और भारत-बांग्लादेश सीमा से सटे 10 किमी के दायरे में आने वाले सभी अवैध अतिक्रमणों को ध्वस्त किया जाएगा। गृह मंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं होगा।

एपल पे भारत में लॉन्च करने की तैयारी

मुंबई : डिजिटल पेमेंट सर्विस एपल पे को भारत में लॉन्च करने की तैयारी है। अमेरिकी कंपनी इसके लिए आईसीआईसीआई, एचडीएफसी, एक्सिस बैंक के साथ-साथ मास्टरकार्ड और वीसा जैसी ग्लोबल कार्ड नेटवर्क्स से भी चर्चा कर रही है। एपल पे यूपीआई और कार्ड-आधारित भुगतान, दोनों को सपोर्ट करेगी। एपल का जून तक भारत में पेमेंट सर्विस लॉन्च करने का लक्ष्य है।

एनसीईआरटी की बुक में जजों के भ्रष्टाचार का चैप्टर

नई दिल्ली : एनसीईआरटी की कक्षा 8 की नई सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक में न्यायिक व्यवस्था के सामने मौजूद चुनौतियों, भ्रष्टाचार, लंबित मामलों का भारी बोझ और जजों की कमी का उल्लेख किया गया है। जबकि पहले के संस्करणों में मुख्य रूप से अदालतों की संरचना और कार्यप्रणाली पर फोकस रहता था।

किताब के 'न्यायपालिका में भ्रष्टाचार' वाले हिस्से में बताया गया है कि जजों के लिए एक खास आचार संहिता होती है। उन्हें न केवल कोर्ट के अंदर बल्कि बाहर भी बहुत ही मर्यादित और ईमानदार व्यवहार करना होता है। लेकिन हकीकत में स्थिति अलग है; लोग आज भी अदालतों के हर स्तर पर भ्रष्टाचार का सामना करते हैं। इसका सबसे बुरा असर गरीब और पिछड़े वर्ग पर पड़ता है, क्योंकि उनके लिए न्याय पाना और भी मुश्किल और महंगा हो जाता है।

छात्रों द्वारा बनाया मिनी सैटेलाइट : लॉन्चिंग सफल

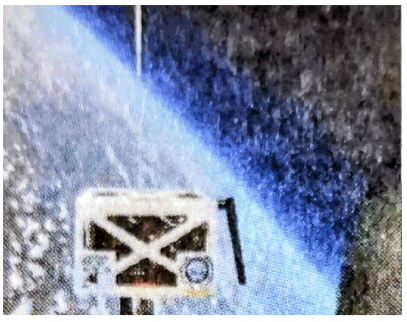

चेन्नई : तमिलनाडु के शिवगंगई जिले के अरियाकुडी गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल के कक्षा 11वीं के 13 छात्रों ने 600 ग्राम का मिनी सैटेलाइट बनाकर सफलता पूर्वक लॉन्च किया। यह डिवाइस 22 किमी की ऊँचाई तक पहुंचा और बाद में सुरक्षित तरीके से रिकवर कर लिया गया। मिशन का नाम विक्को सैट-1 रखा गया। इसे समताप मंडल में फफूंद के कण का पता लगाने के लिए डिजाइन किया गया था।

Created by Universal Document Converter

आवेदन और जवानों की तैनाती ट्रेनिंग के बाद

जयपुर : राजधानी में बढ़ते साइबर अपराधों पर लगाम लगाने के लिए जयपुर कमिश्नरेट में दो नए साइबर थाने खोले जाना प्रस्तावित है। पुलिस प्रशासन ने इसके प्रभावी संचालन की तैयारी प्रारंभ कर दी है। थानों के औपचारिक उद्घाटन से पहले पुलिसकर्मियों को तकनीकी रूप से एक्सपर्ट बनाने पर ध्यान दिया जा रहा है। पुलिस कमिश्नर सचिन मित्तल ने बताया कि इच्छुक जवानों से आवेदन मांगे जाएंगे, फिर उनकी शैक्षणिक योग्यता और तकनीकी समझ के आधार पर चयन किया जाएगा। इन जवानों को डिजिटल फ्रॉड, हैकिंग और वित्तीय ठगी जैसे मामलों को सुलझाने का विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

तीर्थंकर दिवस मनाएंगे 12 मार्च को

उदयपुर : राजस्थान सरकार के अल्पसंख्यक मामलात विभाग ने जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक के उपलक्ष्य में 12 मार्च को तीर्थंकर दिवस (ऋषभ नवमी) मनाने का निर्णय लिया है। प्रदेश के समस्त पंजीकृत मदरसों, अल्पसंख्यक छात्रावासों और आवासीय विद्यालयों में विभिन्न सांस्कृतिक और शैक्षणिक कार्यक्रम होंगे। आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक परंपराओं और नैतिक मूल्यों से परिचित कराना है।

भारत और मालदीव संसदीय मैत्री समूह में नवीन जैन नामित

आगरा : भारत और मालदीव के बीच संसदीय संबंधों को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल करते हुए संसद में भारत-मालदीव संसदीय मैत्री समूह का गठन किया गया है। 11 सदस्यीय इस समूह में राज्यसभा सांसद नवीन जैन को शामिल किया गया है। लोकसभा सचिवालय की कॉन्फ्रेंस एवं प्रोटोकॉल शाखा द्वारा जारी पत्र के अनुसार, 18वीं लोकसभा की अवधि के लिए गठित इस समूह का उद्देश्य दोनों देशों की संसदों के बीच संवाद, सहयोग और मैत्रीपूर्ण संबंधों को और अधिक मजबत करना है।

व्यसन मुक्त समाज, सकारात्मक संकल्प की शक्ति पर बल दिया

जयपुर : मुनि विनम्र सागर ससंघ ने महावीर पार्क में आयोजित विराट हिंदू सम्मेलन को संबोधित किया। महावीर बस्ती शाखा और मुरली मनोहर बस्ती अधिकारी अशोक शर्मा ने बच्चों को धर्म संस्कृति से जोड़ने पर बल दिया। डॉ. माधुरी जैन और रमेश गंगवाल ने बताया कि मुनि श्री ने समाज को आत्मचिंतन का संदेश दिया; साथ ही कहा कि भारत में सनातन धर्म को मानने वालों की संख्या अत्यधिक है। मुनिश्री ने व्यसनमुक्त समाज और सकारात्मक संकल्प की शक्ति पर बल दिया। इस मौके पर सम्मेलन के अध्यक्ष भगवानदास रावत, रोहित शर्मा, अनूप खंडेलवाल मौजूद रहे।

सम्पादक : डॉ. अखिल बंसल, जयपुर
संयुक्त सम्पादक : डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन 'भारती', सनावद
सह सम्पादक : श्रीमती शैल बंसल जयपुर एवं सुरेन्द्र पाण्डया जयपुर
प्रबंध सम्पादक : अनिल पारसदास जैन दिल्ली एवं अंशुल जैन जयपुर

कृपया आप अपना चैक समन्वयवाणी के नाम से पंजाब नेशनल बैंक में खाता सं. 2263002100000749 में जमा कराकर सूचित करें।
IFSC Code - PUNB0226300
Email : samanvayvani@gmail.com

स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती शैल बंसल के लिए बाहुबली प्रिन्टर्स 129, जादोन नगर 'बी' स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से मुद्रित तथा प्रकाशित। मो. 9929655786

अब केरल होगा केरलम्

गोंदिया - जबलपुर रेललाइन के दोहरेकरण की भी मंजूरी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में नए प्रधानमंत्री कार्यालय 'सेवा तीर्थ' में 24 फरवरी को हुई कैबिनेट की पहली बैठक में केरल राज्य का नाम बदलकर केरलम् किए जाने को मंजूरी दी गई।

सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि बैठक में गोंदिया-जबलपुर रेल लाइन के दोहरीकरण के लिए 5236 करोड़ रुपए की बजट स्वीकृति के अलावा अन्य रेल लाइनों के विस्तार को मंजूरी दी गई। कैबिनेट ने संकल्प दोहराया कि 'नागरिक देवो भव' की भावना के साथ कैबिनेट का हर निर्णय लोगों के प्रति सेवा-भाव से प्रेरित व राष्ट्र-निर्माण से जुड़ा होगा।

सुश्री सौम्या जैन ने जैन समाज का किया नाम रोशन

'सुर नूर' उपाधि से विभूषित

जयपुर : सुश्री सौम्या जैन सुपुत्री अरविंद कुमार जैन श्रीमती रिंकू जैन आर के पुरम कोटा हाल मुकाम जयपुर ने दर्शक संस्था जयपुर द्वारा 19 फरवरी से 23 फरवरी तक आयोजित 'सुर नूर' प्रतियोगिता में बांसुरी वादन कर प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक, दस हजार रुपए नकद, ओडियंस अवार्ड व 'सुर नूर' उपाधि से विभूषित व गौरवान्वित होकर जैन समाज का नाम रोशन किया। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार ने जानकारी देते हुवे बताया कि सुश्री सौम्या जैन जिनालयों में, मुनिराज, आर्यिका माताजी के पावन चरणकमलों में बांसुरी वादन द्वारा भक्ति के माध्यम से सबका पावन आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। सुश्री सौम्या जैन अपनी सफलता का श्रेय देवाधिदेव, गुरुजनों के आशीर्वाद व माता-पिता द्वारा प्रदत प्रोत्साहन के साथ स्वयं की लगन व मेहनत को मानती हैं। मैं सुश्री सौम्या जैन के उज्ज्वल भविष्य की मंगलमय कामना वीर प्रभु से करता हूँ। देव-शास्त्र-गुरु के परम भक्त सागरचंद जैन धर्मनिष्ठ व्यवहार कुशल शकुन्तला जैन दादा दादी के द्वारा दिए गए सद् संस्कारों का फल मेरी नजर में कह सकता हूँ।

जैनिज्म पर आधारित फिल्म 'तीर्थंकर' के पोस्टर का विमोचन

जयपुर : दिगंबर जैन परंपरा के आचार्य प्रसन्न सागर ने जैनिज्म पर आधारित फिल्म 'तीर्थंकर' के पोस्टर का विमोचन किया। निर्देशक आर जैन ने बताया कि इस दौरान आचार्यश्री ने आध्यात्मिक संदेश भी रिकॉर्ड कराया। आचार्यश्री ने फिल्म निर्माण के इस प्रयास को समाज के लिए उपयोगी बताते हुए कहा कि तीर्थंकर वे महान आत्माएँ हैं जो मोक्षमार्ग प्रशस्त करती हैं। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर तक, सभी ने आत्मा की शुद्धि को ही परम सुख का स्रोत बताया है। फिल्म में आचार्यश्री की तपस्वी मुद्रा के दृश्य विशेष रूप से शामिल किए जाएंगे, जो साधना और त्याग की प्रेरणा देंगे। उन्होंने बताया कि फिल्म 'तीर्थंकर' में विभिन्न दिगम्बर एवं श्वेतांबर आचार्यों, मुनियों एवं आर्यिकाओं के जैनत्व विषयक संदेश भी रिकॉर्ड किए जा रहे हैं। इस मौके पर पूर्व कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी भी मौजूद रहे।

Created by Universal Document Converter